इकाई 1 जेंडर सम्बन्धी संकल्पनाओं को समझना

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 लिंग (सेक्स) और जेंडर

1.4 जेंडर भूमिकाएँ

1.5 पुरुषत्व

1.6 स्त्रीत्व

1.7 सार्वजनिक और निजी विभेद

1.8 पितृसत्ता

1.9 प्रारूपों को रूढ़ करना (स्टीरियोटाइपिंग)

1.10 नारीवाद

1.11 जेंडर आधारित हिंसा

1.12 यौन उत्पीड़न

1.13 सशक्तीकरण

1.14 सारांश

1.15 महत्वपूर्ण शब्द

1.16 सन्दर्भ

1.17 चिन्तन और अभ्यास हेतु प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रत्येक ज्ञानानुशासन की विशिष्ट संकल्पनाएँ होती हैं। विस्तृत अध्ययन हेतु शिक्षार्थियों के लिए यह जरूरी है कि वे इन संकल्पनाओं को सीखें और इनकी स्पष्ट समझ रखें। इस इकाई में जिन संकल्पनाओं की चर्चा की गई है, वे पाठ्यक्रम 'जेंडर संवेदीकरण : संस्कृति, समाज और परिवर्तन' से सम्बन्धित हैं। ये संकल्पनाएँ सिर्फ इसी पाठ्यक्रम विशेष के लिए नहीं हैं, बल्कि ये महिलाओं और जेंडर के अध्ययनों तथा जेंडर और विकास अध्ययन के ज्ञान–अनुशासन से सम्बन्धित आगे के अध्ययनों में भी शिक्षार्थियों की सहायता करेंगी। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में महिलाओं और जेंडर अध्ययन (डब्ल्यू.जी.एस.), जेंडर और विकास (जी.डी.) के लिए परास्नातक कार्यक्रम उपलब्ध हैं। संकल्पनाओं की व्याख्या करने के साथ–साथ अधिक स्पष्टता हासिल करने के लिए हमने कुछ अभ्यास और केस स्टडीज भी प्रस्तुत किया है। सम्भव है कि इन संकल्पनाओं के बारे में शिक्षार्थियों को बहुत अधिक स्पष्टता इस इकाई में हासिल न हो सके, लेकिन अन्य इकाइयों में इन संकल्पनाओं की बाकायदा (पूर्ण रूप से) विस्तृत व्याख्या की गयी है। अतः पाठ्यक्रम की अन्य इकाइयों को पढ़ने से पहले शिक्षार्थी इन संकल्पनाओं को सावधानीपूर्वक पढ़ें ताकि ये संकल्पनाएँ उन्हें स्पष्ट हो सकें। जिन संकल्पनाओं की व्याख्या इस इकाई में की गयी है, वे हैं– सेक्स और जेंडर, जेंडर भूमिकाएँ, पुरुषत्व, स्त्रीत्व, पितृसत्ता, जेंडर आधारित हिंसा और यौन उत्पीड़न।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- पाठ्यक्रम से सम्बन्धित संकल्पनाओं को परिभाषित कर सकेंगे; और
- अपने दैनिक अनुभवों से जुड़ी संकल्पनाओं पर चर्चा कर सकेंगे और उन्हें समझा सकेंगे।

1.3 लिंग (सेक्स) और जेंडर

लिंग (सेक्स) क्या है? जेंडर क्या है? इन दोनों संकल्पनाओं के बीच अन्तर कैसे किया जाए? इन दोनों संकल्पनाओं के बीच विभेद करना क्यों महत्वपूर्ण है? आइए, लिंग (सेक्स) और जेंडर की संकल्पनाओं के बारे में जाना जाए। लिंग (सेक्स), बुनियादी स्तर पर, महिलाओं और पुरुषों के बीच का जीव–वैज्ञानिक अन्तर है। मनुष्य या तो एक पुरुष के रूप में पैदा होता है, या एक स्त्री के रूप में; हालाँकि, बच्चों की एक बहुत छोटी संख्या ऐसी भी है जिनमें पुरुष और स्त्री की मिश्रित शरीर रचना पायी जाती है। स्त्री और पुरुष के जीव–वैज्ञानिक अन्तर क्रोमोसोमों (पुरुष क्रोमोसोम XY तथा स्त्री क्रोमोसोम XX होते हैं), जननांगों, हार्मोनों और अन्य शारीरिक लक्षणों में प्रतिबिम्बित होते हैं। लिंग परिवर्तन करने के लिए चिकित्सकीय हस्तक्षेप की जरूरत पड़ती है। जब हम जीव विज्ञान या जीव–वैज्ञानिक अन्तरों की बात करते हैं तो हमारे लिए यह याद रखना भी जरूरी है कि ज्ञान के अन्य क्षेत्रों की ही तरह जीव विज्ञान भी परम सत्य या स्थिर नहीं होता। लिंग परिवर्तन की घटनाएँ हमें प्रकृति की जीव वैज्ञानिक व्यवस्था के सन्तुलन के खतरों के प्रति सावधान करती हैं।

लिंग (सेक्स) के विपरीत, जेंडर की निर्मिति सामाजिक रूप से होती है। आइए देखते हैं कि एक बार जब शिशु जन्म लेता है तो किस प्रकार यह सामाजिक निर्मिति घटित होती है। परिवार, समाज और अन्य सामाजिक–आर्थिक प्रथाओं जैसी सामाजिक संरचनाएँ शिशु के सेक्स के आधार पर विभेदों को निर्धारित करती हैं। इन विभेदों में कपड़े पहनाना, व्यवहार, सामाजिक भूमिका, स्थिति, पहचान और जिम्मेदारी शामिल होते हैं। इस प्रकार जेंडर की निर्मिति की जाती है और उसका व्यवहार किया जाता है।

आइए उदाहरणों और सचमुच के जीवन की कहानियों का प्रयोग करते हुए सेक्स और जेंडर जैसे शब्दों का परीक्षण करें। जब एक नवजात शिशु पैदा होता है तो पूरा परिवार उत्साह से जश्न मनाता है। नवजात शिशु के लिंग के आधार पर इस जश्न में अन्तर आ जाता है। सबसे पहले परिवार और समाज, रंगों के कोड के प्रतिमान का अनुसरण करते हुए, शिशु को पहनाने के लिए कपड़ों का निर्धारण करते हैं। अगर नवजात शिशु एक बालिका है तो लोग उसके लिए गुलाबी कपड़े तथा गुड़िया और खाना पकाने वाले बर्तनों का सेट जैसे खिलौने खरीदते हैं। जबकि अगर नवजात शिशु एक बालक है तो लोग उसके लिए नीले कपड़े तथा कार और मोटरसाइकिल जैसे खिलौने खरीदते हैं। परिवार और समाज शिशु के प्रति सधे–सधाए व्यवहार की रचना भी करते हैं, जो बालक के प्रति अलग किस्म का और बालिका के प्रति बिल्कुल दूसरे किस्म का होता है। छोटी बालिका को खूबसूरत नन्हीं परी कहा जाता है, जबकि छोटे बालक को बहादुर और मजबूत बताते हुए उसे न रोने की सलाह दी जाती है क्योंकि रोने–चिल्लाने को स्त्रियोचित गुण के रूप में देखा जाता है। इस तरह ठीक उसी क्षण से जेंडर की निर्मिति शुरू हो जाती है, जिस क्षण एक शिशु पैदा होता है।

जेंडर की निर्मिति अलग–अलग समाजों में अलग–अलग तरीकों से की जाती है। लोग मुख्य रूप से उन भूमिकाओं पर ध्यान देते हैं, जिन्हें निभाने की उम्मीद महिला और पुरुष से की जाती है। बालक और बालिका पर ऐसी भूमिकाएँ थोपने के लिए समाजीकरण की प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विभेदों में शामिल हैं– उत्पादक और पुनरुत्पादक भूमिकाएँ, भुगतान वाले और बिना भुगतान वाले कार्य, शक्ति सम्बन्ध और राजनीति। इन सब बातों पर विस्तृत चर्चा हम अगले हिस्से में करेंगे। पुरुषों और महिलाओं की विद्यमान भूमिकाओं और उनके बीच के सम्बन्धों को विखण्डित (डिकॉन्स्ट्रक्ट) करके जेंडर भूमिकाओं और कोडों पर सवाल उठाए जा सकते हैं। पुरुषों और महिलाओं पर समाज कुछ भूमिकाएँ थोपता है। सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं को इस प्रकार सीमित करती हैं कि वे कुछ निश्चित तरीकों से ही कार्य करें और कुछ निश्चित भूमिकाओं का ही निर्वहन करें, जैसे– प्रजनन और पुनप्रजनन की भूमिकाएँ। उदाहरण के लिए, समाज महिलाओं पर देखभाल और पालन–पोषण करने जैसी प्रजननमूलक भूमिकाओं को थोपता है। सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं को यह अहसास कराती हैं कि वे उत्पादक या सामुदायिक भूमिकाओं की तुलना में प्रजननमूलक भूमिकाओं के लिए अधिक उपयुक्त हैं। निम्नलिखित केस स्टडी आपको दो स्थितियों से रूबरू कराती है, यदि पेशेवर महत्वाकांक्षा समान हो।

उपरोक्त वर्णित सचमुच के जीवन के मामले दर्शाते हैं कि जेंडर की निर्मिति किस प्रकार की जाती है और किस प्रकार महिलाएँ अपनी उत्पादक भूमिकाओं को उलट सकती हैं। किस प्रकार अपनी अभिलाषाओं पर कार्य करने के लिए परिवार और अन्य सामाजिक संरचनाओं को यकीन दिलाते हुए महिलाओं को विभिन्न स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है। जेंडर सम्बन्धी व्यवहार, भूमिकाओं, पहचान और पेशे से चिपके रहने की यह उम्मीद ही जेंडर के प्रारूपों को रूढ़ बनाना (जेंडर स्टीरियोटाइपिंग) है।

आइए अब जेंडर सम्बन्धी कुछ प्रचलित रूढ़ प्रारूपों (स्टीरियोटाइप्स) का अध्ययन करें।

सारणी 1.1 जेंडर के प्रचलित रूढ़ प्रारूप (स्टीरियोटाइप्स)

महिला	पुरुष
परतन्त्र	स्वतन्त्र
कमजोर	शक्तिशाली
अक्षम	सक्षम
कम महत्वपूर्ण	अधिक महत्वपूर्ण
भावुक	तार्किक
परिपालन करने वाली	निर्णय लेने वाला
घर की देखभाल करने वाली	कमाने वाला
समर्थक	नेता
भयग्रस्त	बहादुर
शान्ति बनाने वाली	आक्रामक
सजग	साहसी
मृदुभाषी	मुखर
सन्दर्भ : प्रो. विभूति पटेल, एम.ए. प्रोग्राम, एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय	

उपरोक्त वर्णित जेंडर के रूढ़ प्रारूपों को उलटा जा सकता है और समस्त मनुष्यों (पुरुषों और महिलाओं) के लिए इनकी उपयुक्तता उनके अपने व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। आप इसके बारे में इस इकाई के अनुभाग 1.9 में विस्तार से पढ़ेंगे।

गतिविधि 1

सेक्स और जेंडर को और भी अधिक स्पष्ट तरीके से समझने के लिए कुछ ऐसी महिलाओं से मुलाकात कीजिए, जो माँ बनने वाली हों। कृपया उनसे यह पूछें कि क्या वे एक बालिका शिशु चाहती हैं या एक बालक शिशु। यदि वे बालिका शिशु को वरीयता देती हैं, तो सूची बनाने के लिए उनसे इस चीज का कारण पूछिए। अगर वे एक बालक शिशु चाहती हैं, तो भी सूची बनाने के लिए उनसे कारण पूछिए।

कुछ सम्भावित कारण नीचे दिए गए हैं :

क्र.सं.	बालिका शिशु	बालक शिशु
1.	घरेलू कामकाज और अन्य सहोदर भाई–बहनों का खयाल रखती है।	परिवार को आर्थिक रूप से सहारा देता है।
2.	पुनरुत्पादक कार्यों में संलग्न रहती है, जैसे बड़ों की देखभाल करना और उनका पोषण करना।	विवाह में खर्च कम आता है।
3.	बालिका धन की देवी लक्ष्मी और परिवार की रोशनी होती है।	माता–पिता के अन्तिम संस्कारों को सम्पन्न करता है।
4.	पूरा परिवार उसके घूमने–फिरने पर प्रतिबन्ध लगा सकता है। निर्णय उसकी तरफ से परिवार द्वारा लिए जाते हैं।	परिवार का उत्तराधिकारी है। एक बार जब बालक परिपक्व हो जाता है, तो पितृसत्तात्मक परम्पराओं के तहत वह घर का मुखिया बन जाता है।

गतिविधि 2

सेक्स/जेंडर से सम्बन्धित गुणों का वर्णन करने वाले निम्नलिखित कथनों के जवाब हाँ/नहीं में दीजिए –

1) महिलाएँ कोमल होती हैं और पुरुष सख्त।
2) महिलाएँ गर्भ धारण कर सकती हैं और पुरुष नहीं कर सकते।
3) महिलाएँ अपने बच्चों को स्तनपान कराती हैं; पुरुष बोतलों के जरिये दूध पिलाते हैं।
4) बच्चे जनना माताओं की जिम्मेदारी है।
5) पुरुष निर्णय लेते हैं।
6) पुरुषों के पास दाढ़ी–मूँछ होती है और महिलाओं के पास नहीं।
7) महिलाएँ पुरुषों की कमाई का सिर्फ सत्तर प्रतिशत ही कमा सकती हैं।
8) महिलाएँ जन्म देती हैं और पुरुष जन्म नहीं देते।
9) महिलाएँ आसानी से रो लेती हैं और पुरुष आसानी से नहीं रोते।

10) महिलाएँ हर महीने रजस्वला होती हैं।

11) लड़कों की आवाज किशोरावस्था में मोटी हो जाती है।

12) पुरुष कमानेवाला/घर का मुखिया होता है।

(एमजीएस–003 जेंडर विश्लेषण, खण्ड–1, इकाई–1 से उद्धृत)

आइए, अब इसका अध्ययन करें कि जेंडर भूमिकाओं से हम क्या समझते हैं।

1.4 जेंडर भूमिकाएँ

पिछले अनुभाग में हमने पढ़ा कि लिंगों के बीच जीव वैज्ञानिक अन्तर सामान्यतः नहीं बदलते, जब तक कि कोई चिकित्सकीय हस्तक्षेप न किया जाए। हालाँकि, महिलाएँ और पुरुष अपनी विशेषताओं, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को एक खास तरीके से महसूस करते हैं, जो उनके लैंगिक अन्तरों के कारण उत्पन्न नहीं होतीं। महसूस किए गए अन्तरों के आधार पर ये उनके लिए नियत कर दी जाती हैं यानी यह एक सामाजिक निर्मिति है। आसपास की सामाजिक व्यवस्था की सांस्कृतिक अपेक्षाओं के आधार पर ये भूमिकाएँ अलग–अलग समाजों के लिए अलग–अलग होती हैं। जेंडर भूमिकाओं की माँग है कि महिलाओं और पुरुषों के लिए नियत की गई गतिविधियाँ इन अलग–अलग अनुभूतियों पर आधारित हों। इसी प्रकार भूमिकाओं के ये अन्तर पुरुषों और महिलाओं को अलग–अलग पेशे चुनने की तरफ ले जाते हैं। जेंडर भूमिकाएँ शुद्ध रूप से तय की गई चीजें हैं, न कि ये पुरुषों या महिलाओं के कौशलों पर आधारित होती हैं। व्यापक रूप से कहा जाए तो पुरुषों की भूमिकाएँ आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी होती हैं और राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एनएसए) में इनकी गणना होती है, जबकि महिलाओं की भूमिकाएँ देखभाल और पालन–पोषण से सम्बन्धित होती हैं। बहुत सम्भव है कि इनकी गणना एनएसए में न की जाए, जैसे – खाना पकाना, साफ–सफाई करना तथा बच्चों और वृद्धों की देखभाल करना। हालाँकि, सम्भव है कि पुरुष ये घरेलू काम न करते हों।

बॉक्स सं. 1.1

कैरोलिन मोजर के अनुसार ''अधिकांश विकासशील देशों में महिलाओं पर तिहरा बोझ होता है। उनको तीन तरीके की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है – प्रजननमूलक, उत्पादक तथा सामुदायिक प्रबन्धन और सामुदायिक राजनीति''।

प्रजननमूलक भूमिकाओं में बच्चे जनना, बच्चे पालना, परिवार के वृद्धों की देखभाल करना तथा घरेलू कामकाज शामिल है। इन प्रजननमूलक भूमिकाओं के साथ–साथ महिलाएँ द्वित्तीयक आय अर्जकों के रूप में उत्पादक भूमिकाएँ भी निभाती हैं। महिलाओं द्वारा सम्पन्न की गई इन गतिविधियों की गणना आर्थिक गतिविधियों के रूप में नहीं की जाती। इसे राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एनएसए) में सम्मिलित नहीं किया जाता। महिलाओं की उत्पादक भूमिकाओं में शामिल हैं – अंशकालिक आर्थिक गतिविधियाँ, खेती–किसानी का काम करके मजदूरी लाना, दुधारू पशुओं की देखभाल करना तथा शहरी इलाकों में अनौपचारिक क्षेत्रकों में संलग्न होना।

इन सबके अतिरिक्त, महिलाएँ सामुदायिक प्रबन्धन और सामुदायिक राजनीति में भी शामिल होती हैं। इसे उनके उत्पादक कार्यों के विस्तार के रूप में देखा जाता है। इन गतिविधियों और भूमिकाओं में सामूहिक उपभोग के लिए सामुदायिक परिसम्पत्तियों की व्यवस्था और उनका रखरखाव शामिल होता है। महिलाएँ समस्त समुदाय की स्वास्थ्य

देखभाल और शिक्षा के कार्य में भी संलग्न होती हैं। महिलाओं द्वारा निभायी जाने वाली इन सामुदायिक भूमिकाओं के लिए उन्हें किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता। महिलाओं के विपरीत, पुरुष जब सामुदायिक राजनीति और गतिविधियों का यही कार्य करते हैं, तो उन्हें इसके एवज में भुगतान मिलता है, चाहे नकद रूप में या वस्तु रूप में।

अनेक समाजों में महिलाएँ खेती–किसानी और पशुपालन के लिए भूमि या खेत के छोटे टुकड़ों की देखभाल करने जैसी उत्पादक गतिविधियों को भी सम्पन्न करती हैं। इस कामकाज को प्रायः कार्य के रूप में नहीं देखा जाता और अक्सर इस कामकाज के बदले महिलाओं को कोई भुगतान भी नहीं मिलता। महिलाएँ बहुत–सी ऐसी भूमिकाएँ भी निभा सकती हैं, जो औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों, आर्थिक क्षेत्रकों में मजदूरी को आकृष्ट करती हैं। लेकिन पुरुषों के विपरीत महिलाओं की आर्थिक रूप से उत्पादक भूमिकाओं को अक्सर कम आँका जाता है या उन्हें तुलनात्मक रूप से बहुत कम महत्व दिया जाता है।

विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न समयों में जेंडर भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ बदलती रहती हैं। उदाहरण के लिए, अकुशल श्रम को भारत में 'महिलाओं के कार्य' के रूप में, जबकि अफ्रीका में 'पुरुषों के कार्य' के रूप में देखा जाता है। इसी तरह यूरोप और संयुक्त राज्य अमरीका में घरेलू गतिविधियों में पुरुषों की भूमिका अधिकाधिक प्रत्यक्ष होती जा रही है। पुरुषों और महिलाओं की अलग–अलग भूमिकाओं और गतिविधियों के आधार पर पुरुषों और महिलाओं की जरूरतें भिन्न–भिन्न हो जाती हैं।

आगे अध्ययन करने से पहले, अब तक पढ़ी गई संकल्पनाओं के बारे में अपनी समझ का मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित अभ्यास को कीजिए–

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) लिंग (सेक्स) और जेंडर की संकल्पनाओं की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

आइए, अब इस चीज का अध्ययन करें कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व से क्या तात्पर्य होता है।

1.5 पुरुषत्व

पुरुषत्व (masculinity) शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्दों 'masculinus' और 'masculus' से हुई है, जिनका अर्थ क्रमशः 'पुरुष व्यक्ति' और 'पुरुष' होता है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम चौदहवीं शताब्दी में 'पुरुष लिंग (सेक्स)' के अर्थ में किया गया था। इस शब्द का प्रयोग पुरुषों के विशिष्ट गुणों को सन्दर्भित करने के लिए किया जाता है। पुरुषत्व के लक्षण हैं– मजबूती, बल, पुरुषोचित हिम्मत और मर्दानगी। पुरुषत्व पर सन् 1960 और 1970 के दशकों के विद्वतापूर्ण अध्ययनों ने यह समझा कि महसूस और ग्रहण की गई विशेषताएँ पुरुष

पहचान को निर्धारित करती हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया के तहत प्राप्त किए गए सांस्कृतिक मानक और मूल्य आक्रामकता, महत्वाकांक्षा, विश्लेषणात्मक योग्यता और मुखरता जैसे पुरुष अभिलक्षणों को हासिल करने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। सन् 1979 में रायविन कॉनेल द्वारा लिखे गये एक विद्वतापूर्ण पर्चे (कॉनेल 1983) ने बालकों में शरीर की सामाजिक निर्मिति के बारे में चर्चा की थी। अपने स्कूली दिनों में बालक खेलकूद को अधिक महत्व देते हैं। वे शारीरिक गठन, ताकत और मजबूती के विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। इस महिला विद्वान ने आगे यह भी समझाया था कि बालकों और पुरुषों में पुरुषोचित विशेषताओं को विकसित करने का अभियान समाजीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है।

1.6 स्त्रीत्व

स्त्रीत्व महिलाओं से जुड़े गुणों, व्यवहारों, वेशभूषा, विशेषताओं, शारीरिक बनावट, अभिलक्षणों, मुद्राओं का सांस्कृतिक रूप से निर्मित समुच्चय है। यह प्राकृतिक नहीं है, बल्कि निर्मित है और इसका उत्पादन सामाजिक रूप से होता है। फ्रांसीसी दार्शनिक सिमोन द बोउवार (1949) ने लिखा था कि 'स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बनायी जाती है।' जुडिथ बटलर के मुताबिक ''अभिनय यानी प्रदर्शन के बार–बार किए जाने वाले कार्य स्त्रीत्व का भ्रम रचते हैं''। यह स्त्रीत्व स्वभावगत और देशीयकृत हो जाता है तथा जेंडर और स्त्री गुणों/पहचानों की निर्मिति करता है। स्त्रीत्व पर अध्ययन नव–उदारवाद, संस्कृति, जाति और अन्य सामाजिक संरचनाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। यह अध्ययन इस बात पर भी अपना ध्यान केन्द्रित करता है कि ये संरचनाएँ किस प्रकार महिलाओं की स्वतन्त्रता और उन्हें मिलने वाले अवसरों को प्रतिबन्धित करती हैं और किस प्रकार महिलाओं के दमन और जेंडर असमानता को बढ़ाती हैं। उदाहरण के लिए, महिलाएँ हालिया समय में यूरोपीय संघ में रोजगार के पीछे प्रेरक शक्ति रही हैं। इसके बावजूद वहाँ वेतन को लेकर जेंडर अन्तराल कायम है (www.ec.europa.eu; यूरोपीय आयोग)। निम्नलिखित सारणी आपके सामने भारत में जेंडर असमानता का एक चित्र खींचती है–

सारणी 1.3 : जेंडर असमानताएँ – भारत में कुछ सूचक

जनांकिकीय प्रोफाइल				
जनसंख्या	इकाई	1991	2001	2011
कुल	करोड़	84.6	102.9	121.1
महिला	करोड़	40.7	49.6	58.7
पुरुष	करोड़	43.9	53.2	62.3
लिंगानुपात				
सम्पूर्ण भारत		926	933	943
ग्रामीण		938	946	949
शहरी		893	900	929
जीवन प्रत्याशा	वर्ष	2001–05	2006–10	2011–15
पुरुष		63.1	64.6	67.3
महिला		65.6	67.7	69.6

साक्षरता दर (सात से अधिक वर्ष)	प्रतिशत	1991	2001	2011
कुल		52.21	64.84	72.99
पुरुष		64.13	75.26	82.14
महिला		39.29	53.67	65.46
उच्च शिक्षा	प्रतिशत	1950–51	2005–06	2013–14
कुल		उपलब्ध नहीं	11.16	21.1*
पुरुष		उपलब्ध नहीं	13.5	22.3
महिला		उपलब्ध नहीं	9.4	19.3

सन्दर्भ : भारत आँकड़े 2015, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मन्त्रालय

***अनन्तिम**

सारणी 1.3 स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि जेंडर अन्तर और असमानताएँ सभी स्तरों पर मौजूद हैं। पूरे विश्व में निर्धनों का बहुलांश महिलाएँ ही हैं। अपनी पुस्तक 'आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका' में अफ्रीकी कृषि प्रतिमान पर एस्थर बोसरप के कार्य से प्राप्त प्रमाण भी स्पष्ट रूप से बताते हैं कि महिलाएँ खाद्य उत्पादन में संलग्न रहती हैं। लेकिन खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) के अनुसार, अधिकांश समाजों में भूमि का स्वामित्व पुरुषों के पास रहता है।

1.7 सार्वजनिक और निजी विभेद

सार्वजनिक और निजी के बीच का विरोधाभास महिलाओं को घर तक सीमित करता है और उनके घूमने–फिरने पर प्रतिबन्ध लगाता है। इसके अलावा यह विरोधाभास महिलाओं को देखभाल करने और पालन–पोषण करने जैसी घरेलू भूमिकाएँ निभाने के लिए बाध्य करता है। महिलाओं के भौतिक स्वावलम्बन और शिक्षा तक उनकी पहुँच के लिए सार्वजनिक और निजी के बीच के विरोधाभास के महत्वपूर्ण परिणाम होते हैं। सार्वजनिक और निजी का सवाल मताधिकार और जीवन के अन्य क्षेत्रों में समान सहभागिता के लिए महिलाओं के संघर्ष में केन्द्रीय रहा है। निजी का सम्बन्ध घरेलू क्षेत्र के भीतर की जाने वाली गतिविधियों से है तथा सार्वजनिक में घरेलू क्षेत्र से बाहर की गतिविधियाँ शामिल होती हैं। नारीवादियों के विचार में यह विभेद पदसोपानीय और पितृसत्तात्मक है। यह विभाजन महिलाओं को अधीनस्थ भूमिकाओं और प्रस्थिति की तरफ ले जाता है। निजी और सार्वजनिक का यह अलगाव महिलाओं को उनकी पुनरुत्पादक भूमिकाओं के कारण उन्हें निजी क्षेत्रों तक ही सीमित बनाए रखता है तथा पुरुषों को यह अलगाव सार्वजनिक क्षेत्र में अर्थव्यवस्था, व्यवसाय, राजनीति और कानून के क्षेत्रों में स्थित करता है।

1.8 पितृसत्ता

पितृसत्ता को पुरुष/पिता के शासन के रूप में परिभाषित किया जाता है। पितृसत्तात्मक संस्थाएँ पुरुष के प्रभुत्व को मजबूत बनाती हैं और महिला को अधीन स्थिति में रखती हैं। प्रभावी शक्ति सम्बन्ध समाज में विभिन्न स्तरों पर संचालित होते हैं और सभी स्तरों पर महिलाओं/बालिकाओं के विरुद्ध भेदभाव करते हैं। यह भेदभाव महिलाओं के लिए न सिर्फ

अवसरों को कम करता है और महिलाओं के अभिकर्तृत्व को कमजोर करता है, बल्कि यह महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को भी जन्म देता है। इसके अतिरिक्त पितृसत्ता निजी क्षेत्र की सीमा निर्धारित करती है और इस बात पर जोर देती है कि निजी क्षेत्र महिलाओं के लिए तथा सार्वजनिक क्षेत्र पुरुषों के लिए होता है। पितृसत्तात्मक मानक परिवार, समाज, राजनीति, सरकार, मीडिया और धर्म जैसी सामाजिक संरचनाओं में प्रभावी रहते हैं। पितृसत्तात्मक समाज में सम्पत्ति का उत्तराधिकार पुत्र को मिलता है और इसे पितृवंशीय उत्तराधिकार कहा जाता है। पितृसत्तात्मक परम्परा और पितृकेन्द्रित व्यवस्था में विवाह के बाद महिलाओं से अपने पति के घर आने और वहीं बस जाने की उम्मीद की जाती है।

आइए, अब निम्नलिखित अनुभाग में जेंडर प्रारूपों को रूढ़ करने (स्टीरियोटाइपिंग) के बारे में अध्ययन करें।

1.9 प्रारूपों को रूढ़ करना (स्टीरियोटाइपिंग)

स्त्रीवाचक और पुरुषवाचक गुणों और विशेषताओं पर बार–बार जोर देना ही जेंडर प्रारूपों को रूढ़ करना (जेंडर स्टीरियोटाइपिंग) है। जेंडर स्टीरियोटाइप ऐसे विश्वास हैं जो बताते हैं कि पुरुषों और महिलाओं को क्या नहीं करना चाहिए और वे क्या कर सकते हैं। समय बीतने के साथ इनमें परिवर्तन किया जा सकता है। लेकिन ये परिवर्तन बहुत धीमे होते हैं। हम जेंडर स्टीरियोटाइप्स के कुछ उदाहरण देख सकते हैं। महिलाओं से उम्मीद की जाती है कि वे देखभाल करें, पालन–पोषण करें, दयालु और हार्दिक हों तथा बच्चों में उनकी रुचि हो। अधिकांश समाजों में उपरोक्त वर्णित गुण महिलाओं के लिए ही उपयुक्त समझे जाते हैं। बुद्धिमत्ता जैसे गुण पुरुषों और महिलाओं, दोनों, में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। दक्षिण एशियाई समाजों में महिलाओं को परिचय–योग्य होना चाहिए, उन्हें उचित प्रकार से कपड़े पहनने चाहिए तथा रोजाना के घरेलू कामों में उन्हें निपुण होना चाहिए। पेशे के सन्दर्भ में, एशियाई समाजों में लड़कियों को पारम्परिक पेशे अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन पारम्परिक पेशों में मुख्य रूप से शामिल हैं – शिक्षण या चिकित्सा कार्य, जो पुनरुत्पादक भूमिकाओं यानी देखभाल और पालन–पोषण करने से सम्बन्धित हैं।

जेंडर स्टीरियोटाइप्स के कारण पुरुषों और महिलाओं के लिए अपनी–अपनी भूमिकाओं को उलटने की प्रक्रिया धीमी होती है और विभिन्न स्तरों पर निष्पादन में संघर्ष पैदा होता है। मीडिया, खासतौर पर मुद्रित और दृश्य मीडिया (टेलीविजन और सिनेमा) जेंडर स्टीरियोटाइपिंग में योगदान देता है। अधिकांश कॉमर्शियल सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिक पुरुषों को पुरुषत्व के गुणों के साथ चित्रित करते हैं। लोकप्रिय सिनेमा और टेलीविजन में महिलाओं को अधिकांशतः निर्भर दिखाया जाता है और वे स्त्रीवाचक भूमिकाओं का निर्वहन करती हैं।

पिछले अनुभाग में सीखी गयी चीजों के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित अभ्यास करें।

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) पुरुषों और महिलाओं में जेंडर को रूढ़ बनाने (जेंडर स्टीरियोटाइपिंग) के दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) पुरुषत्व और स्त्रीत्व को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

नीचे दिए गए अनुभागों में आप कुछ और ऐसी संकल्पनाओं के बारे में पढ़ेंगे, जो चीजों को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में समझने में आपकी सहायता करेंगी।

1.10 नारीवाद

नारीवाद एक आन्दोलन है। यह महिलाओं की हीन प्रस्थिति पर सवाल खड़े करता है। यह आन्दोलन की माँग करता है कि पुरुषों और महिलाओं की प्रस्थिति एक समान हो। यह एक विचारधारा भी है जो महिलाओं को सशक्तीकृत करने की दिशा में कार्य करती है। यह एक सामूहिक चेतना है। कोई भी व्यक्ति या समूह जेंडर समानता और जेंडर न्यायसंगतता (इक्विटी) के लिए प्रयास कर सकता है तथा महिलाओं के विरुद्ध होने वाले दमन, अन्याय, शोषण और हिंसा के खिलाफ लड़ सकता है।

'नारीवादी (फेमिनिस्ट)' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1871 में फ्रांस में चिकित्सकीय पुस्तकों में किया गया था। नारीवाद को उन आन्दोलनों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, जो विभिन्न ऐतिहासिक अवधियों में उभरे। नारीवाद की पहली लहर की अवधि उन्नीसवीं शताब्दी का भूतपूर्व और बीसवीं शताब्दी का पूर्व थी। उस अवधि के दौरान महिलाओं को मताधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया गया था। नारीवाद की दूसरी लहर की गतिविधियाँ 1960 और 1970 के दशकों में मौजूद थीं। इसमें लोगों ने महिलाओं के लिए परिवार में, कार्यस्थल पर और लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) के सन्दर्भ में पुरुषों के समान अधिकारों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। 1990 के दशक के प्रारम्भ में नारीवाद की तीसरी लहर शुरू हुई और यह अब तक जारी है।

1.11 जेंडर आधारित हिंसा

जेंडर आधारित हिंसा (जी.बी.वी.) 'किसी व्यक्ति के साथ भेदभाव करके की गई हिंसा' का अनुभव है। यह भेदभाव उस व्यक्ति के लिंग, प्रजाति, वर्ग, धर्म, लैंगिकता (सेक्सुअलिटी), योग्यता और स्थितिपरक कारकों के आधार पर किया जाता है। 1970 के दशक के 'बैटर्ड विमेन' आन्दोलन ने जेंडर आधारित हिंसा की संकल्पना के उभार में बहुत योगदान दिया है। यह आन्दोलन नारीवाद की दूसरी लहर का एक हिस्सा था।

जेंडर आधारित हिंसा से जुड़े मुद्दों को सम्बोधित करने में महिलाओं और नारीवादियों के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक मददगार रहा है। चार अन्तरराष्ट्रीय महिला सम्मेलनों ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में हिंसा की पहचान की तथा नीति के सन्दर्भ में एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया।

1.12 यौन उत्पीड़न

यह कार्यस्थल पर जेंडर आधारित लैंगिक (सेक्सुअल) हिंसा है। अवांछनीय लैंगिक हरकतों के जरिये दूसरों को धमकाना तथा कार्यस्थल पर प्रतिकूल वातावरण पैदा करना भी यौन उत्पीड़न है। इसमें लैंगिकता के रंग में रंगे इशारे करना, स्पर्श करना, चिढ़ाना, लैंगिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए माँग करना, अश्लील चीजें दिखाना तथा यौनिक प्रकृति का कोई अन्य अवांछनीय शारीरिक, मौखिक या अमौखिक आचरण करना शामिल है। यौन उत्पीड़न पीड़ित लोगों को बहुत बुरी तरह प्रभावित करता है। सिंगापुर (अवेयर, 2008) में पाँच सौ उत्तरदाताओं के मध्य एक अध्ययन किया गया और पाया गया कि आधे से अधिक लोगों ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का दंश झेल रखा था। इस पाठ्यक्रम की इकाई 16 कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के मुद्दे पर विस्तार से विचार करेगी।

1.13 सशक्तीकरण

नाइला कबीर सशक्तीकरण को इस रूप में परिभाषित करती हैं कि "इसमें, एक सन्दर्भ में, जीवन में लोगों की रणनीतिक चयन करने की योग्यता में विस्तार आ जाता है, जहाँ पहले यह चयन करने की मनाही होती थी।" नाइला कबीर सशक्तीकरण के तीन आयामों को वर्णित करती हैं– (1) संसाधन (परिस्थितियाँ); (2) अभिकरण (प्रक्रिया); और (3) उपलब्धि। सशक्तीकरण की प्रक्रिया में, महिलाएँ और पुरुष दोनों अपने–अपने जीवन पर नियन्त्रण रखते हैं। अपनी–अपनी कार्यसूचियाँ वे स्वयं तय करते हैं। वे कौशल हासिल करते हैं। वे आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं। वे अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं और आत्मनिर्भरता का विकास करते हैं।

1.14 सारांश

इस इकाई में आपने जेंडर को समझने से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण संकल्पनाओं का अध्ययन किया है। इन संकल्पनाओं को समझकर आप इस योग्य हो जाएँगे कि अपने दैनिक जीवन में जेंडर के निहितार्थों को समझ सकें। यह समझ समाज के सत्तासीन वर्ग में जेंडर के विशेषाधिकारों के बारे में सीखने में मदद करेगी तथा दूसरी तरफ उस वर्ग को भी समझने में मदद करेगी जो उतने शक्तिशाली नहीं हैं, सुभेद्य हैं और समाज में हाशिये पर हैं।

1.15 शब्दावली

जीव–वैज्ञानिक आवश्यकतावाद और समाजीकरण : यह जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी में बदलने की प्रक्रिया है। जन्म के समय एक शिशु जीव–वैज्ञानिक इकाई होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया में बालक या बालिका होने के लिए यह जीव–वैज्ञानिक इकाई जेंडर के अभिलक्षणों को ग्रहण करती है।

सामाजिक संरचना : इसमें शामिल हैं – सामाजिक संस्थाएँ (उदाहरण के लिए, परिवार, विवाह और नातेदारी), सामाजिक व्यवहार (संस्कार और अनुष्ठान) और सामाजिक प्रक्रियाएँ (जैसे– समाजीकरण और आत्मसातीकरण/आधुनिकीकरण)।

राष्ट्रीय लेखा प्रणाली : राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एस.एन.ए.) समष्टि–अर्थशास्त्रीय लेखाओं, तुलन पत्रों (बैलेंस शीट्स) और अन्तरराष्ट्रीय रूप से स्वीकृत संकल्पनाओं, परिभाषाओं,

वर्गीकरणों और लेखा नियमों के एक सुसम्बद्ध, सुसंगत और एकीकृत समुच्चय से मिलकर बनी होती है।

1.16 सन्दर्भ

इवांस, मैरी और कैरोलिन एच. विलियम्स, 2013, जेंडर द की कंसेप्ट्स, ऑक्सॉन : रूटलेज।

फ्रीडमैन, 2002, फेमिनिज्म, नई दिल्ली : वीवा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड।

लिप्स, हिलेरी एम., 2014, जेंडर द बेसिक्स, ऑक्सॉन : रूटलेज।

वात्स्यायन, कपिला, 2016, विमेनटरप्रेन्योर्स, नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशन।

वुडवार्ड, काथ, 2012, द शॉर्ट गाइड टू जेंडर, नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स।

1.17 चिन्तन और अभ्यास हेतु प्रश्न

1) उपयुक्त उदाहरणों के साथ सेक्स और जेंडर की संकल्पनाओं पर चर्चा कीजिए।
2) जेंडर भूमिकाएँ क्या हैं? अपने दैनिक जीवन से कुछ उदाहरण दीजिए।
3) पितृसत्ता क्या है? कुछ उदाहरण दीजिए।
4) नारीवाद क्या है? इसके विभिन्न प्रकार क्या–क्या हैं?
5) एक उपयुक्त उदाहरण के साथ सशक्तीकरण शब्द की व्याख्या कीजिए।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY